सहे तो सहे कैसे दु:ख इतने,
कहे तो कहे किससे गम अपने,
सहे तो सहे कैसे दु:ख इतने।।

तर्ज जियें तो जियें कैसे।

आखरी है दर तेरा,
सोचके मैं आयीं हूँ,
दु:ख दर्द के सिवा,
कुछ भी ना लाई हूँ,
असुवन की केवल लगी है झड़ी,
सर पर मुसीबत पड़ी है बड़ी,
सहें तो सहें कैसे दु:ख इतने,
कहे तो कहे किससे गम अपने,
सहे तो सहे कैसे दु:ख इतने।।

किया था भरोसा मैंने,
तेरी दुनिया दारी पे,
हसता है हर कोई,
मेरी लाचारी पे,
गिरते हुए को और गिराया,
खेल जगत का समझ ना आया,
सहें तो सहें कैसे दु:ख इतने,
कहे तो कहे किससे गम अपने,
सहे तो सहे कैसे दु:ख इतने।।

कहते है लोग तुझे,
हारे का सहारा है,
नजरे उठाके देखो,
श्याम भी हारा है,
अब फैसला तुम ही करो,
ठुकरा दो या फिर बाहों में भरो,
सहें तो सहें कैसे दु:ख इतने,
कहे तो कहे किससे गम अपने,
सहे तो सहे कैसे दु:ख इतने।।

सहे तो सहे कैसे दु:ख इतने,
कहे तो कहे किससे गम अपने,
सहे तो सहे कैसे दु:ख इतने।।

स्वर गिन्नी कौर जी।

Source: https://www.bharattemples.com/sahe-to-sahe-kaise-dukh-itne-bhajan/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples

Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw